दस्तावेज़ शीर्षक: गोकुल का महासंग्राम (16 मार्च 1757) - नागा साधुओं का ऐतिहासिक प्रतिरोध

संग्रह प्रकार: ऐतिहासिक शोध एवं आर्काइव दस्तावेज़

© 22nd Aug. 2026, Govind Malviya (REAL HI STORY)

---

1. ऐतिहासिक पृष्ठभूमि (HISTORICAL BACKGROUND)

वर्ष 1757 की शुरुआत में अफगान शासक अहमद शाह अब्दाली ने भारत पर अपना चौथा आक्रमण किया। दिल्ली पर कब्ज़ा करने और भारी तबाही मचाने के बाद, अब्दाली ने अपने मुख्य सेनापतियों–सरदार जहान खान और सरदार खान–को ब्रज क्षेत्र (मथुरा, वृंदावन, गोकुल और आगरा) पर आक्रमण करने का आदेश दिया।

* मथुरा का कत्लेआम (1 मार्च 1757): होली के दिन अफगान सेना ने मथुरा पर हमला किया। निहत्थे नागरिकों, तीर्थयात्रियों और पुजारियों का नरसंहार किया गया।

* वृंदावन का विनाश (6 मार्च 1757): वृंदावन में मंदिरों को नष्ट किया गया और व्यापक कत्लेआम हुआ, जिससे कई दिनों तक यमुना का जल रक्तवर्ण रहा।

मथुरा और वृंदावन को नष्ट करने के बाद, लगभग 10,000 से 20,000 अफगान सैनिकों की टुकड़ी लेकर सेनापति सरदार खान ने यमुना पार स्थित 'गोकुल' की ओर रुख किया। गोकुल में श्रीनाथजी और गोकुलनाथ जी के प्राचीन मंदिर थे। गोकुल के पास कोई दुर्ग (किला) या नियमित शाही सेना नहीं थी।

---

2. रक्षकों का आगमन: दशनामी नागा संन्यासी (THE NAGA WARRIORS)

गोकुल की ओर बढ़ती अफगान सेना का सामना करने के लिए दशनामी अखाड़े के लगभग 4,000 से 5,000 नागा साधु एकत्रित हुए।

* वेशभूषा एवं स्वरूप: नागा साधु पूर्णतः नग्न थे, उनके शरीर पर चिताओं की भस्म लगी थी और सिर पर लंबी जटाएं थीं। वे किसी भी धातु के कवच से रहित थे।

* अस्त्र-शस्त्र: अफगान सेना आधुनिक बंदूकों (Matchlocks) और तलवारों से लैस थी, जबकि नागा साधुओं के पास भारी फरसे (कुल्हाड़ी), त्रिशूल, चौड़ी तलवारें और लोहे के विशाल चिमटे थे।

* युद्ध नीति: अखाड़ा प्रणाली के तहत प्रशिक्षित ये साधु ध्यान और अस्त्र-शस्त्र संचालन दोनों में निपुण थे तथा मृत्यु के भय से पूरी तरह मुक्त थे।

---

3. युद्ध का प्रत्यक्ष विवरण (THE BATTLE OF GOKUL: 16 MARCH 1757)

16 मार्च 1757 को जब सरदार खान की सेना ने गोकुल की सीमा में प्रवेश किया, तब नागा साधुओं ने 'हर-हर महादेव' के उद्घोष के साथ उन पर प्रत्यक्ष आक्रमण कर दिया।

* आमने-सामने की भिड़ंत (Close-Quarter Combat): अफगान सैनिकों द्वारा गोलियां चलाए जाने के बावजूद, नागा साधु गिरे हुए योद्धाओं को लांघते हुए सीधे अफगान घुड़सवारों तक पहुँचे।

* आक्रामक युद्ध शैली: साधुओं ने अपने भारी फरसों से अफगान सैनिकों और उनके घोड़ों पर प्रहार किया। त्रिशूलों और लोहे के चिमड़ों के प्रयोग से अफगान पंक्तियों में अव्यवस्था फैल गई।

* मनोवैज्ञानिक प्रभाव: नागा साधुओं के अदम्य साहस और उग्र रूप को देखकर अफगान सैनिकों में भय व्याप्त हो गया।

---

4. युद्ध का परिणाम एवं प्रभाव (OUTCOME & CONSEQUENCES)

* अफगान सेना की वापसी: भारी क्षति और अप्रत्याशित प्रतिरोध को देखते हुए सेनापति सरदार खान को अपनी सेना को पीछे हटने (Retreat) का आदेश देना पड़ा। गोकुल और वहां के मंदिर सुरक्षित रहे।

* हताहतों की संख्या: इतिहासकार जदुनाथ सरकार के अनुसार, इस भीषण संघर्ष में लगभग 2,000 नागा साधु वीरगति को प्राप्त हुए, और इतने ही अफगान सैनिक भी मारे गए।

* अब्दाली का अभियान अंत: गोकुल में मिले प्रतिरोध और इसके पश्चात अफगान शिविरों में फैली हैजा (Cholera) की महामारी के कारण अब्दाली को अप्रैल 1757 में भारत से वापस काबुल लौटना पड़ा।

---

5. प्रामाणिक ऐतिहासिक स्रोत (HISTORICAL SOURCES)

1. Sir Jadunath Sarkar - "Fall of the Mughal Empire", Volume 2 (Section: Invasion of Ahmad Shah Durrani, 1757).

2. Dr. Ganda Singh - "Ahmad Shah Durrani: Father of Modern Afghanistan" (1959).

3. समकालीन मराठा दस्तावेज़ (पेशवा दफ्तर के पत्र, मार्च-अप्रैल 1757).

4. तारीख-ए-अहमद शाही (Tarikh-i-Ahmad Shahi - Persian Records).

Document Cataloged for Internet Archive Preservation.

Author/Compiler: Govind Malviya (REAL HI STORY)

Date of Document Issue: 22nd August 2026

DOCUMENT TITLE: The Battle of Gokul (16 March 1757) - The Naga Sannyasi Resistance

ARCHIVE CATEGORY: Historical Research & Archival Monograph

COPYRIGHT & DISCLAIMER: © 22nd Aug. 2026, Govind Malviya (REAL HI STORY)

---

1. HISTORICAL CONTEXT

In early 1757, the Afghan ruler Ahmad Shah Abdali launched his fourth major invasion into the Indian subcontinent. After capturing and sacking Delhi, Abdali dispatched his senior commanders, Sardar Jahan Khan and Sardar Khan, to plunder the Braj region.

* Sacking of Mathura (1 March 1757): On the day of the Holi festival, Afghan forces entered Mathura, executing thousands of unarmed pilgrims, priests, and residents.

* Destruction of Vrindavan (6 March 1757): Vrindavan suffered a similar fate, with temple structures destroyed and widespread massacres reported along the Yamuna riverbank.

Following these events, General Sardar Khan led a detachment of approximately 10,000 to 20,000 troops across the Yamuna toward Gokul, an unfortified town housing the historical shrines of Shrinathji and Gokulnathji. Gokul lacked any garrison or royal standing army.

---

2. THE ENGAGEMENT OF THE DASHANAMI NAGA SADHUS

To defend the town of Gokul, an estimated force of 4,000 to 5,000 Naga Sadhus belonging to the Dashanami Akhara sects assembled along the perimeter.

* Attire and Equipment: The Naga ascetics wore no metal armor; their bodies were smeared with cremation ash. They carried traditional weapons including battle-axes (farsa), tridents (trishul), heavy broadswords, and solid iron tongs (chimta).

* Combat Preparedness: Trained under the monastic martial traditions (Akhara system), these ascetics operated with high discipline and complete disregard for personal mortality.

---

3. THE BATTLE OF GOKUL (16 MARCH 1757)

On 16 March 1757, as Sardar Khan's cavalry advanced into Gokul, the Naga Sadhus launched a direct counter-offensive.

* Close-Quarter Tactics: Despite volley fire from Afghan matchlocks, surviving ascetics closed the distance to engage the cavalry directly.

* Engagement Style: Utilizing battle-axes and heavy hand weapons, the Naga warriors targeted both mounts and riders, disrupting the cohesion of the Afghan cavalry lines.

* Psychological Impact: The aggressive close-combat style and tactical resistance presented by the ascetics broke the momentum of the Afghan advance.

---

4. OUTCOME AND AFTERMATH

* Afghan Retreat: Facing substantial casualties and determined resistance, General Sardar Khan ordered a strategic retreat. Gokul and its temples remained un-sacked.

* Casualties: According to historian Jadunath Sarkar, approximately 2,000 Naga Sadhus fell during the conflict, with heavy losses inflicted on the opposing Afghan detachment.

* Strategic Withdrawal: Following the setback at Gokul and a subsequent outbreak of cholera within the Afghan encampments, Ahmad Shah Abdali concluded his campaign and withdrew his forces back to Kabul in April 1757.

---

5. CITATIONS & HISTORICAL EVIDENCE

1. Sarkar, Sir Jadunath. "Fall of the Mughal Empire", Vol. 2. Orient Blackswan / M.C. Sarkar & Sons.

2. Singh, Dr. Ganda. "Ahmad Shah Durrani: Father of Modern Afghanistan" (1959).

3. Selections from the Peshwa Daftar (Contemporary Maratha Intelligence Reports, March-April 1757).

4. Tarikh-i-Ahmad Shahi (Contemporary Persian Chronicle).

Archival Metadata:

Document ID: ARCH-1757-GOKUL-001

Preservation Repository: Internet Archive / Public History Monograph

Compiler: Govind Malviya (REAL HI STORY)

Publication Date: 22nd August 2026